शोध-मंथन Vol. VII No. 2, 2016 ISSN No. (P) 0976-5255, (e) 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

''भारत की वर्तमान परिस्थितियों में गांधीवादी दर्षन''

डॉ. रजनी दुबे*
सहायक प्राध्यापक राजनीतिषास्त्र
शास. स्वषासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर

यदि समाज को बदलना है तो मनुष्य को बदलना होगा। व्यक्ति के हृदय परिवर्तन से ही वास्तविक क्रांति सफल हो सकती है। क्रांति केवल आर्थिक राजनीतिक ही नहीं होती बल्कि सांस्कृतिक भी होती है। भारत की शोषित–पीड़ित एवं दरिद्र व्यक्ति रोटी–रोजी की तलाष में दर–दर भटक रहा है। गांधी ने भटकते दरिद्र लोगों को छाती खोलकर गोली खाने की शक्ति प्रदान की यही वीरता है। नमक अमीर गरीब सभी खाते हैं और कपड़ा अमीर गरीब सभी पहनते हैं इसलिये गांधी ने चर्खा आंदोलन एवं नमक तोड़ो आन्दोलन चलाया। बापू ने भूखों–गरीबों की रोटी में ईष्वर को देखा। इसीलिये उन्होनें दरिद्रनारायण की कल्पना की। ''दरिद्रनारायण का अर्थ है गरीबों का ईष्वर गरीबों के हृदयों में निवास करने वाला ईष्वर।''

स्माज में क्रांति के भिन्न–भिन्न अस्त्र रहे हैं, लेकिन गांधी का अस्त्र सत्याग्रह है। वे सत्याग्रह के माध्यम से ही अहिंसक समाज स्थापित करना चाहते हैं। भारत के सात लाख गांवों को ही अपने स्वराज्य का आधार माना है प्रत्येक गांवों को चार स्तम्भों पर खड़ा करके स्वावलम्बन की कल्पना की है – खेती,–बाड़ी, पशुधन तथा उद्योग। गांधी जी गांव सुधार और देष की गरीबी दूर करने हेतु गांवों में कृषि और गृह उद्योगों पर बल देते रहे। अधिक पैदावार प्राप्त करने के लिये भूमि की उर्वरा शक्ति बहुत ही आवष्यक है। अच्छी जमीन श्रम करने पर अच्छी पैदावार देती है। यदि देष की उन्नति करना है तो उसकी शुरूआत गांवों में रहने वाले किसानों और उनके मुख्य व्यवसाय कृषि के विकास से आरम्भ करना पड़ेगा महात्मा गांधी जी ने अपने ग्रामोद्धार कार्यक्रम के अन्तर्गत सम्पूर्ण देष का भ्रमण किया और स्वराज्य प्राप्ति के लक्ष्य के साथ–साथ आर्थिक स्वतंत्रता हेतु सामुदायिक विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

कृषि समस्या का राजनीतिक आधार तो था ही, साथ ही साथ उसे प्राकृतिक–सामाजिक आधार पर भी प्राप्त था। भारत में भूमि का सबसे बड़ा दोष इसका छोटे–छोटे टुकड़ों में विभाजित होना था। अस्थाई स्वामित्व, सिंचाई की कमी, मानसून पर निर्भरता तथा भूमि का कटाव, कुछ अन्य प्रमुख दोष थे। कृषि के औजार पुराने तथा कम उपयोगी हैं। गाय के गोबर सरीखे अच्छे खाद को कण्डे बनाकर जलाने के काम में लाया जाता है। गांधी के समाजवादी व्यवस्था में कृषि का समान वितरण करना है। समाज के पिछले–भूमिहीन वर्ग को भूमि देकर सहकारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकास करना है। देष के आर्थिक क्षेत्र में समाज की रचना गांधीवादी समाजवादी ढांचे में होना आवष्यक है। ''इस प्रकार समाजवादी ढांचे पर आधारित समाज का

मूल उद्धेष्य सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था को समान न्यायपूर्ण अवसर प्रदान करता है।'' भारत की पंचवर्षीय योजनाओं में आयोजन के अर्न्तगत गांधी के समाजवादी दर्षन के अनुरूप समाज निर्माण का कार्य आरम्भ किया गया है। भारत सरकार के सामुदायिक विकास का कार्यक्रम महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम का विस्तार है। बापू का रचनात्मक कार्यक्रम, जो छुआछूत के भेदभाव को मिटाकर साम्प्रदायिक एकता स्थापित कर गांवों को समान रूप से आर्थिक एकता के सूत्र में बांधता था।

आजादी के बाद से देष के सामने सबसे बड़ी समस्या थी कि अहिंसक रूप में सरकार को किस तरह चलाया जाये। अहिंसा का भविष्य उतना उज्जवल नहीं हो सकता था, जब तक कि विष्व की शक्ति के सामने, भारत अपनी आजादी को कायम रखने के लिये समर्थ न हो जाये। उद्योगों के लिये पर्याप्त प्राकृतिक साधन भारत में उपलब्ध हैं यद्यपि महात्मा गांधी भारी मषीनों तथा यंत्रों के कम से कम प्रयोग के पक्ष में थे। भारत में जिन विषल योजनाओं का लक्ष्य बनाया गया, चाहे वह औद्योगिक क्षेत्र हों या कृषि क्षेत्र में उसका मुख्य उद्धेष्य था कि देष की बढ़ती आबादी की समस्या हल कर सके। आज देष की आवष्यकताओं को गांधी के समाजवादी चिंतन के आधार पर ही हल किया जा रहा है। ''जहां एक ओर बड़े–बड़े स्वचालित एवं तकनीकी उद्योग हैं, अर्न्तराष्ट्रीय बाजार की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, वहीं हमने लघु उद्योग द्वारा खद्दर और ग्रामीण हस्तकला आदि को अपनाने में भी कोई संकोच नहीं किया।

भारत के चर्तुदिक विकास के लिये भिन्न–भिन्न प्रयास किये जा रहे हैं यह गांधी के समाजवादी दर्षन का ही प्रभाव है कि सभी क्षेत्रों में उनकी छाप स्पष्ट नजर आ रही है राकेट, अंतरिक्ष यात्रा, हाईड्रोजन बम, न्यूट्रान बम, मिसाइल, इलेक्ट्रानिक औजारों के उद्योगों को देखते हुये छोटे उद्योगों तथा छोटी मषीनों की बात करने हिचकते हैं परन्तु बापू ने बड़ी निर्भीकता से अपने विचार रखे। इसी कारण भारतीय परिवेष में गांधी विचार दर्षन की उपादेयता पर अपना मत प्रकट करते हुये प्रसिद्ध अर्थषास्त्री शुमाखेर ने 1962 में कहा था कि ''भारत में परम्परा वाले पांच रूपये के औजार तथा आधुनिक उद्योगों के पचास हजार रूपयों की मषीनों के बीच मध्ययम प्रौद्योगिकी का नया रूप भारत के लिये इन पारिस्थितियों में आवष्यक हैं।'' इसी तरह का विचार प्रकट करते हुये सन् 1955 में कर्वे कमेटी ने जो रिपोर्ट प्रस्तुत की है उसके अनुसार सारी समस्याओं पर विचार करने के उपरान्त यही निष्कर्ष निकला है कि ग्रामोद्योग द्वारा राष्ट्र की समस्याओं का निराकरण सम्भव है।''

महात्मा गांधी ने अपने जीवन काल में खादी ग्रामोद्योग, कृषि, प्राकृतिक चिकित्सा, बुनियादी षिक्षा, खाद, पशुपाल, गांव सफाई, छुआछूत का विरोध, कोढ़ी सेवा आदि बातों का व्यवहारिक प्रयोग किया और आज भी भारत में बापू द्वारा चलाये गये प्रयोगों को और अधिक तीब्र गति से चलाया जा रहा है। आज की परिस्थितियों में गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम अधिक सार्थक प्रतीत हो रहे हैं। आज देष की समस्यायें पुनः उन्हीं कार्यक्रमों को लागू करने के लिये बाध्य कर रही हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि गांधीवादी दर्षन में ही देष की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक समस्याओं का समाधान निहित हैं। भारत की वर्तमान परिस्थितियों में गांधी दर्षन का समाजवादी पृष्ठभूमि पर मूल्यांकन करना ही होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. *गांधी, एम.के. (काषीनाथ त्रिवेदी–अनु0) सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा (नवजीवन प्रकाषन मंदिर अहमदाबाद)*
2. *गांधीजी 'पंचायत राज' (आर0के0 प्रभु संग्राहक) (नवजीवन प्रकाषन मंदिर, अहमदाबाद)*
3. *गांधी : 'बुनियादी षिक्षा (नवजीवन प्रकाषन मंदिर अहमदाबाद)*
4. *गांधी : 'व्यक्तित्व, प्रभाव और विचार' (भारत सरकार द्वारा प्रकाषित)*
5. *गांधी : 'स्मरण और विचार' (भारत सरकार द्वारा प्रकाषित)*
6. *गांधी महात्मा : 'आरोग्य की कुंजी' प्राकृतिक चिकित्सा संघ, गोरखपुर*
7. *गांधी, एम.के. : गीता बोध (सरला साहित्य मंडल, दिल्ली)*
8. *अन्य पत्र–पत्रिकायें।*